महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०)-273165

अंक – 04 | समाचार – पत्रिका | अप्रैल, 2022

सम्पादक मंडल

मुख्य संपादक

डा0 विवेक प्रताप सिंह

(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)

संपादक

डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव

(वि.व. वि. – उद्यान)

डा0 राहुल कुमार सिंह

(वि.व. वि. – कृषि प्रसार)

डा0 संदीप प्रकाश उपाध्याय

(वि.व. वि. – मृदा विज्ञान)

श्री अवनीश कुमार सिंह

(वि.व. वि. – सस्य विज्ञान)

श्रीमती श्वेता सिंह

(वि.व. वि. – गृह विज्ञान)

संकलन एवं सहयोग

श्री गौरव कुमार सिंह

(कार्यक्रम सहायक - कम्प्यूटर)

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र,चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित

Email– gorakhpurkvk2@gmail.com

Website – http://www.mgkvk.in/

Facebook- https://www.facebook.com/mgkvk

Twitter – https://www.twitter.com/mgkvk

Youtube – https://www.youtube.com/channel/UCdZ8rAP_lDHeU6Ic5sNNYEw

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

एक नजर में

कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रुप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता हैं।

संदेश

प्रो. उदय प्रताप सिंह
उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति
गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान
गोरखनाथ, गोरखपुर

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहुँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।

(उदय प्रताप सिंह)

महाययोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर द्वारा अप्रैल, 2022 में किये गये कार्य

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	संख्या	लाभार्थी
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	01	26
ख) कृषि प्रसारकर्मियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	02	29

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल हे०/ सं०	लाभार्थी संख्या
क) हरे चारे के रूप में बरसीम उच्च उत्पादन क्षमता वाली प्रजाति BL 43 का कृषक प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन	02	30
ख) जौ की उच्च उत्पादन क्षमता वाली प्रजाति RD 2907 एवं DWRB 137 का कृषक प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन	04	10
ग) प्याज की उन्नतशील प्रजाति अग्रिफौंद लाइट रेड का परिक्षण प्रदर्शन	0.25	10
घ) चने में जैव उर्वरक प्रबंधन का प्रदर्शन	2.5	10

4. प्रसार गतिविधियां

शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
ग) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	18	23
घ) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	42	42
ङ) मोबाइल सलाह	55	2104
च) समाचार पत्र प्रकाशन	30	सामूहिक

कृषि प्रसारकर्मियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ केंद्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव, द्वारा दिनांक - 12/04/2022 को कृषि विभाग के कार्यरत प्रसार कर्मियों को " ग्रीन हॉउस, नेट हॉउस एवं पाली हाउस द्वारा औधोनिक फसल उत्पादन में उपयोग " विषय पर जानकारी महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञानं केंद्र, चौकमाफी में दी गयी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ संदीप प्रकाश उपाध्याय, डॉ राहुल कुमार सिंह एवं डॉ श्वेता सिंह ने भी आवशयक जानकारी दी।

❖ दिनांक- 05/04/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय द्वारा महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र में कृषि विभाग के कृषि प्रसारकर्मियों को "जायद फसलों में समेकित पोषक तत्व प्रबन्धन" विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। जिसमे 14 कृषि प्रसारकर्मियों ने प्रतिभाग किया।

कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ दिनांक 22/04/22 को केंद्र कि गृह विज्ञानं विशेषज्ञ श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा "ग्रामीण महिलाओ के सशक्तिकरण के लिए आय सृजन गतिविधिया" विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन कराया गया। जिसमे महिलाओ को आय सृजन करने के विभिन्न अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी।

❖ दिनांक 23/04/22 को केंद्र कि गृह विज्ञानं विशेषज्ञ श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा आईएफएस यूनिट के सामने स्वच्छता अभियान के अंतर्गत "वेस्ट टू वेल्थ " विषय पर प्रशिक्षण दिया गया।

❖ दिनांक- 30/04/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय द्वारा महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञानं केंद्र में पोषक तत्वों की दक्षता बढाने हेतु दलहन फसलों में जैव उर्वरकों का उपयोग विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। जिसमे 26 कृषको ने प्रतिभाग किया।

प्रक्षेत्र भ्रमण

❖ दिनांक 05/04/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय द्वारा कृषि प्रसारकर्मियों को केंद्र के प्रछेत्र एवं स्थापित विभिन्न इकाईयों का भ्रमण कराया गया। जिसमे 14 कृषि प्रसारकर्मियों ने प्रतिभाग किया।

❖ केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय एवं उद्यान विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव द्वारा दिनांक- 06/04/2022 को श्री राकेश सिंह ग्राम भुइधर्पुर ब्लाक भरोहिया के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया तथा सब्जी में खरपतवार प्रबंधन के साथ अन्य आवश्यक जानकारी दी गयी।

❖ दिनांक 08/04/2022 को केंद्र के डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव विशेषज्ञ (उद्यान), द्वारा ग्राम कर्तहरी में किसानो की आम की फसल का निरीक्षण कर फल फटने एवं गिरने की समस्या का निराकरण कर उत्पादन सम्बन्धी आवश्यक सलाह दी।

❖ दिनांक 12/04/2022 को केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय ने आयुक्त, गोरखपुर मंडल, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ग्राम जंगल अहमद अली शाह उर्फ़ तुरा, ब्लाक पिपराइच में आयोजित कैम्प में प्रतिभाग किया। जिसमे कृषको को जैविक खेती, जैविक उत्पादों की महत्ता सहित ई. के. वाई. सी. भी करने सम्बन्धित जानकारी दी।

❖ केंद्र के मृदा विशेषज्ञ डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय एवं लैब तकनीशियन श्री जितेन्द्र सिंह द्वारा दिनांक- 13/04/2022 को श्री रणजीत सिंह ग्राम जंगल बिहुली ब्लाक भरोहिया के प्रक्षेत्र से मृदा नमूना एकत्र किया गया तथा वर्मीकम्पोस्ट इकाई का भ्रमण किया गया।

❖ केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. विवेक प्रताप सिंह एवं शस्य वैज्ञानिक अवनीश कुमार सिंह द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत बरसीम (प्रजाति BL 43) एवं गेहूं (DBW 187) के प्रक्षेत्र का भ्रमण किया गया।

प्रक्षेत्र दिवस

❖ केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. विवेक प्रताप सिंह द्वारा दिनांक 02-04-2022 को अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत कृषको में वितरित बरसीम की उच्च उत्पादकता वाली प्रजाति BL 43 पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन जंगल कौड़िया ब्लाक के मीरपुर गाँव में किया गया। इस अवसर पर प्रसार वैज्ञानिक डॉ राहुल कुमार सिंह एवं शस्य वैज्ञानिक अवनीश कुमार सिंह उपस्थित होकर किसानों का मार्गदर्शन किया।

❖ केंद्र के सस्य वैज्ञानिक श्री अवनीश कुमार सिंह द्वारा दिनांक 02-04-2022 को अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत कृषको में वितरित जौ की उच्च उत्पादकता वाली प्रजाति RD 2907 पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन चरगावा ब्लाक के रामपुर गोपालपुर गाँव में किया गया। इस अवसर पर प्रसार वैज्ञानिक डॉ राहुल कुमार सिंह एवं पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. विवेक प्रताप सिंह उपस्थित होकर किसानों का मार्गदर्शन किया।

कृषक सम्मान

दिनांक 29-30 अप्रैल 2022 को राष्ट्रीय शिक्षा एवं सशक्तिकरण फाउंडेशन, लखनऊ द्वारा आयोजित "सतत लाभप्रदता के लिये फसल - विशिष्ट प्रौद्योगिकीयों को प्राथमिकता देना" पर दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन प्रदेश के राजधानी लखनऊ में किया गया। कार्यक्रम में महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र के प्रगतिशील एवं नवोन्मेषी कृषक श्री विष्णु प्रताप सिंह, निवासी मलउर, पाली को कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में नवीनतम तकनीको को अपनाने, नवीन कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रसार, बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी, किसानों को बीज की आपूर्ति, जैविक खेती, आजीविका में सुधार और स्थायी आय सृजन में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिये उन्हें "गणेश सिंह मेमोरियल नवोन्मेषी कृषक पुरस्कार 2021" एवं गिरजेश कुमार निवासी चाँदबारी को "गणेश सिंह मेमोरियल युवा उद्यमी पुरस्कार 2021" से सम्मानित किया गया। श्री सिंह द्वारा कालानमक बीज उत्पादन, गेहूं एवं धान के बीज उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन, मत्स्य, मुर्गी, सघन बागवानी, मॉडल किचन गार्डन जैसी चीजें उनके प्रक्षेत्र पर व्यवस्थित रूप देखने को मिलती है। वही गिरजेश कुमार द्वारा बकरी, मुर्गी एवं बटेर पालन के क्षेत्र में एक उदाहरण प्रस्तुत किया है, इनके द्वारा शुद्ध नश्ल के बकरियो (बरबरी, सिरोही, जखराना) एवं चूजों जैसे कड़कनाथ, वनराजा, सोनाली, ग्रामप्रिया, जापानी बटेर का उत्पादन एवं कृषको को आपूर्ति तथा आजीविका में सुधार के लिए यह पुरस्कार दिया गया। जहाँ पहले जनपद में इन चीजों की उपलब्धता नही के बराबर थी वही महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र के प्रयासों एवं कृषको के सहयोग से इन चीजों की उपलब्धता अपने आप मे गौरवपूर्ण है।

मई माह के मुख्य खेती-बाड़ी के कार्य

फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

धान :-

- धान की नर्सरी लगाने हेतु खेत की तैयारी करें। धान की देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह से डाली जा सकती है। बीज को कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज उपचारित करें। इसके बाद पी.सी.बी. की 5 ग्राम तथा एजोटोबैक्टर कल्चर की 5 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज से उपचारित करके बोयें। खासतौर पर देर व मध्यम अवधि वाली किस्मों को बोएं।
- ग्रीष्मकालीन मूंग व उड़द फसलों में निराई, गुड़ाई कार्य करें एवं समय – समय पर सिंचाई करते रहें।

मृदा विज्ञान

- हरी खाद के लिए ढैंचा या सनई की बुवाई भूमि की उर्वरता बढाने के लिए बहुत ही उपयोगी है। हरी खाद की फसले 45-50 दिन में पलटने योग्य हो जाती हैं। अतः रोपाई के समय को ध्यान में रखते हुए बुवाई करे।
- भूमि में पोषक तत्वों की कमी जानने के लिए मृदा परीक्षण करवा ले। भूमि का समतीलीकरण कर लें, जिससे सिचाई के समय पानी पूरे खेत में एक समान फैले।

- रबी की फसल की कटाई के बाद मिटटी पलटने वाले हल से गर्मी की जुताई करना लाभदायक होगा। गर्मी की जुताई से खरपतवार की संख्या में कमी होती है, साथ ही हानिकारक कीड़े भी नष्ट हो जाते हैं और भूमि की पानी सोखने व रोकने की क्षमता भी बड जाती है।
- भूमि में पोषक तत्वों की कमी जानने के लिए मृदा परीक्षण करवा ले तथा भूमि में उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करे।

मौनपालन

- उचित प्रक्षेत्र का चयन कर ,मौनवंशों का समय से माईग्रेशन करें
- मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोटैशियम परमैगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें
- माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें
- अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो
- गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए

पशुपालन

- **गर्मियों में मुर्गियों का प्रबंधन:**

गर्मी में मुर्गी पालन व्यवसाय से जुड़े कृषको के लिए यह आवश्यक है कि बढ़ते तापमान से मुर्गियों को बचाया जाए क्योंकि गर्मी अधिक बढ़ने से मुर्गियों में मृत्यु दर बढ़ सकती है। मुर्गियों में मृत्यु दर बढ़ने से मुर्गीपालकों को आर्थिक क्षति उठानी पड़ सकती है।गर्मी के मौसम में थोड़ी सावधानी से मुर्गियों को तेज गर्मी के प्रकोप से बचाया जा सकता है और अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सकता है। चूजों में गर्मी सहने की क्षमता अधिक होती है और करीब 42 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर ये चूजे आसानी से रह लेते हैं। जबकि वयस्क मुर्गियों को गर्मी में अधिक परेशानी होती है। गर्मी बढ़ने पर चूजों को फार्म में ही रखें और खिड़की को पर्दे से आधा ढक दें जिससे सीधी धूप से बचाव हो सके और हवा का संचरण भी बना रहे। खेत में ताजे पानी की आपूर्ति हमेशा रखें। अंडे देने वाली मुर्गियों में तापमान सहने की क्षमता मांस के लिए पाली जाने वाली मुर्गियों की तुलना में अधिक होती है। मुर्गियों के शेड में जरूरत से अधिक मुर्गियां रखना हानिकारक होता है। मुर्गियों के शेड में अधिक भीड़ होने से गर्मी बढ़ेगी और मुर्गियों में लू लगने का अंदेशा बढ़ेगा। गर्मियों में पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ा दें क्योंकि गर्मी के मौसम में मुर्गियां पानी के बर्तन के चारों ओर बैठ जाती है जिससे दूसरी मुर्गियों को पानी नही मिल पाता है। तेज गर्मी में अगर मुर्गियों को एक घंटे भी पानी न मिले तो लू लगने से उनकी मृत्यु हो सकती है। पानी के बर्तनों की संख्या बढ़ाने के साथ ही यह भी ध्यान रखें कि धातु के बर्तन के स्थान पर मिट्टी के बर्तन में पानी रखें। नियमित रूप से पानी में खनिज तत्व थोड़ा-थोड़ा मिला कर दें इससे लू लगने का खतरा कम रहेगा और वजन भी तेजी से बढ़ने में मदद मिलेगा। अगर किसी मुर्गी में गर्मी लगने के लक्षण दिखाई दें तो उसे खनिज तत्व पानी में मिलाकर पिलायें और मुर्गी को उठा कर पानी में एक डुबकी देकर छांव में रख दें और स्वस्थ होने पर वापस बाड़े में डाल दें। यह प्रक्रिया तुरंत की जानी आवश्यक है। देर होने पर मुर्गी मर सकती है।

इन बातों पर विशेष ध्यान दे-

- चूज़ों के फार्म पर पहुँचते ही पानी मे एलेक्ट्रल मिलाकर पिलायें। चूज़ों को 5-6 घंटे तक यही पानी पीने को दें
- 100 चूज़ों के लिए 3-4 बर्तन पानी के बर्तन लगाये

- ❖ 6-8 घंटे तक मात्र मक्के का दलिया दें
- ❖ दिन के समय ब्रूडिंग ना करें
- ❖ बुरादे में मोटाई 1.5-2 इंच रखें
- ❖ मुर्गी के शेड को हवादार बनायें रखें एवं पर्दों को दिन-रात दोनों समय खुला रखें
- ❖ मुर्गियों की छत को गर्मी से बचाने के लिए छत पर घास व पुआल आदि को डाल सकते हैं या छत पर सफेदी करवा सकते हैं

❖ **गर्मियों में पशुओं का प्रबंधन:**

गर्मियों में तापमान 45 डिग्री के पार चला जाता है। ऐसे मौंसम में पशु दबाव की स्थिति में आ जाते हैं। इस दबाव की स्थिति का पशुओं की पाचन प्रणाली और दूध उत्पादन क्षमता पर उल्टा प्रभाव पड़ता है। इस मौसम में नवजात पशुओं की देखभाल में अपनायी गयी तनिक सी भी असावधानी उनकी भविष्य की शारीरिक वृद्धि, स्वास्थ्य, रोग प्रतिरोधी क्षमता और उत्पादन क्षमता पर स्थायी कुप्रभाव डाल सकती है। गर्मी में पशुपालन करते समय ध्यान न देने पर पशु के सूखा चारा खाने की मात्रा में 10 से 30 प्रतिशत और दूध उत्पादन क्षमता में 10 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। साथ ही साथ अधिक गर्मी के कारण पैदा हुए आक्सीकरण तनाव की वजह से पशुओं की बीमारियों से लड़ने की अंदरूनी क्षमता पर बुरा असर पडता है और आगे आने वाले बरसात के मौसम में वे विभिन्न बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। जिससे उनकी उत्पादन व प्रजनन क्षमता में गिरावट आ जाती है। पशुओं के शरीर पर दिन में तीन या चार बार जब वायुमंडल तापमान अधिक हो, ठंड़े पानी का छिड़काव करें। यदि सम्भव हो तो तालाब व जोहड़ में भैसों को ले जाएं। प्रयोगों से यह साबित हुआ है कि दोपहर को पशुओं पर ठंड़े पानी का छिड़काव उनके उत्पादन व प्रजनन क्षमता को बढ़ानें में सहायक होता है। गर्मियों में पशु चारा चरना कम कर देते है। गर्मियों में जल वायुमंडलीय तापमान पशुओं के शारीरिक तापमान से अधिक हो जाता है तो पशु सूखा चारा खाना कम कर देते है क्योंकि सूखा चारा को पचाने में शरीर में उष्मा का अधिक मात्रा में निकलता है। अतः पशुओं को चारा प्रातः या सांयकाल में ही उपलब्ध कराना चाहिए तथा जहां तक सम्भव हो पशुओं के आहार में हरे चारे की मात्रा अधिक रखें। गर्मी में पशुपालन करते समय पशुओं को हरे चारे की अधिक मात्रा उपलब्ध कराना के दो लाभ हैं, एक तो पशु अधिक चाव से स्वादिष्ट एवं पौष्टिक चारा खाकर अपनी उदरपूर्ति करता है, तथा दूसरा हरे चारे में 70-90 प्रतिशत तक पानी की मात्रा होती है, जो समय-समय पर जल की पूर्ति करता है। यदि पशुओं को चारागाह में ले जाते है तो प्रातः व सांयकाल को ही चराना चाहिए जब वायुमंडलीय तापमान कम हो। गर्मी के मौसम में पशुओं को भूख कम लगती है और प्यास अधिक। इसलिए पशुओं को पर्याप्त मात्रा में दिन में कम से कम तीन बार पानी पिलाना चाहिये। जिससे शरीर के तापक्रम को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।पशुशाला के आस-पास छायादार वृक्षों का होना परम आवश्यक है। यह वृक्ष पशुओं को छाया तो प्रदान करते है साथ ही उन्हें गरम लू से भी बचाते है। हरे चारे हेतु पशुपालक को चाहिए कि गर्मी के मौसम में हरे चारे के लिए मार्च, अप्रैल माह में चरी, मूंग, मक्का, काऊपी, आदि की बुवाई कर दें जिससे गर्मी के मौसम में पशुओं को हरा चारा उपलब्ध हो सके। ऐसे पशुपालन जिनके पास सिंचित भूमि नहीं है, उन्हें समय से पहले हरी घास काटकर एवं सुखाकर हे तैयार कर लें। यह घास प्रोटीन युक्त, हल्की व पौष्टिक होती है।

सब्जियों की खेती

- ❖ भिन्डी / बैगन को फली बेधक सुंडी से बचाए।
- ❖ लहसुन की फसल में खुदाई के 10-12 दिन पूर्व सिचाई बंद कर दे।
- ❖ अदरक व् हल्दी में खेत की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर 200-250 कुंतल गोबर की खाद या 75 कुंतल नाडेप कम्पोस्ट प्रयोग करना चाहिये।
- ❖ प्रति हेक्टेअर अदरक की 18-20 कुंतल व् हल्दी की 15 -20 कुंतल बीज की आवशयकता होती है।

फलों की खेती

- ❖ आम फलों को गिरने से रोकने के लिए नेप्थालिन एसिटिक एसिड (20 पी.पी. एम.) 2 ग्राम प्रति 100 ली. पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिए।
- ❖ यदि नीबू में फल फटने की समस्या हो तो पोटैशियम सल्फेट के 4 प्रतिशत घोल का छिडकाव करे।
- ❖ नींबू में समय पर सिचाई करते रहे।
- ❖ गुम्मा व्याधि ग्रसित बौर को हटा देना चाहिए।
- ❖ यदि बाग ईट के भट्टे के पास हो तो निदान हेतु बोरेक्स (1%) का छिडकाव करे।
- ❖ आम में भुंनगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास (1.0 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) घोलकर छिड़काव करे।
- ❖ लीची के बागो की आवश्यकतानुसार सिचाई करते रहे।
- ❖ लीची में फ्रूट बोरर की रोकथाम हेतु डाईक्लोरोवास आधा मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ लीची को फटने से बचाने हेतु भूमि में सिचाई कर पर्याप्त नमी बनाये रखे। फल विगलन रोग के रोकथाम के लिए फलों के पकने से 20-25 दिन पूर्व कार्बेन्डाजिम 50% WP 2.0 प्रतिशत (दो ग्राम दवा / लीटर पानी) का छिडकाव करे।

फूलो की खेती

- ❖ गर्मी वाले मौसमी फूलो जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सुन्फ्लोवर, कोचिया, नारंगी, गोमफ्रिना आदि के पौधों की आवशयकातानुसार सिचाई करें।
- ❖ गुलाब में आवश्यकता अनुसार सिचाई एवं गुड़ाई करे।

संपर्क सूत्र			
नाम	**पद**	**विषय**	**मो.नं.**
डा0 विवेक प्रताप सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन	**07651922058**
डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव	विषय वस्तु विशेषज्ञ	उद्यान	**08787264166**
डा0 राहुल कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	कृषि प्रसार	**07007275688**
डा0 संदीप प्रकाश उपाध्याय	विषय वस्तु विशेषज्ञ	मृदा विज्ञान	**09621437547**
श्री अवनीश कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	**09792099943**
श्रीमती श्वेता सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	गृह विज्ञान	**09453158193**